ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 790-793
www.allresearchjournal.com
Received: 11-08-2020
Accepted: 15-09-2020

डॉ. रचना सिंह
पूर्व शोधप्रज्ञाए विनोबा भावे विश्वविद्यालयए हजारीबाग।
महेश नगर, पटना भारत।

Corresponding Author:
डॉ. रचना सिंह
पूर्व शोधप्रज्ञाए विनोबा भावे विश्वविद्यालयए हजारीबाग।
महेश नगर, पटना भारत।

अश्वघोष के काव्य में वर्णित कपिलवस्तु का वैभव

डॉ. रचना सिंह

सारांश
संस्कृत वाङ्मय में अश्वघोष का नाम उन कवियों में समाहित है जिन्होंने संस्कृत साहित्य को पल्लवित-पुष्पित होने के लिए अपने अक्षय कृतियों से सिंचित किया है। जिस भूमि पर कालिदास का साहित्य लहलहा उठा उस भूमि को उर्वर बनाने में अश्वघोष की महती भूमिका है। अश्वघोष की रचनाओं के संदर्भ में काफी खोजबीन के बाद भी अनेक प्रकार के संशय अभी विद्यमान हैं। यह तो अस्पष्ट हो चुका है कि सौन्दरनन्दं महाकाव्य एवं बुद्धचरित महाकाव्य अश्वघोष की रचनाएं ही हैं। इन काव्यों को लेकर भी विवाद की एक लंबी परंपरा रही है लेकिन इन सभी को सुलझाते हुए अब एकमत से इस तथ्य को स्वीकार लेने में कोई संकोच नहीं है कि ये दोनों ही रचनाएं अश्वघोष कृत हैं। इन रचनाओं पर अश्वघोष की धार्मिक मान्यताओं का स्पष्ट छाप लक्षित है। कोई भी साहित्यकार अपने साहित्य में अपनी मान्यताओं को स्थापित अवश्य करता है। अश्वघोष ने बुद्ध चरित्र की रचना करते हुए महात्मा बुद्ध की उपलब्धियों, उनके जीवन संघर्षों, उनके संदेशों और उनकी मान्यताओं को प्रमुखता से स्थापित करने का कार्य किया। वही सौन्दरनन्दं में जीवन दर्शन को और अधिक व्यापकता से वर्णित करते हुए बौद्ध धर्म से पहले की मान्यताओं को सामने रखकर बौद्ध मत को ऊंचा दिखलाया गया है। सौन्दरनन्दं महाकाव्य में कवि ने इस तथ्य को स्पष्ट रूप से स्थापित कर दिया कि जो सांसारिकता और सांसारिक जीवन में लिप्त होकर जीवन गुजार रहे हैं उनके लिए मुक्ति संभव नहीं है मुक्ति का मार्ग बौद्ध धर्म की मान्यताओं के अनुरूप ही मिल पाना संभव है। सौन्दरनन्दं और बुद्धचरित दोनों ही महाकाव्य भगवान बुद्ध को केंद्र में रखकर रचे गये हैं। दोनों ही महाकाव्यों में कथाभूमि कपिलवस्तु रही है ,जहां भगवान बुद्ध का अवतरण हुआ। कपिलवस्तु एक समृद्ध राज्य था। उसके वैभव का वर्णन सौन्दरनन्दं में एक अलग सर्ग की आवश्यकता तलाश लेता है। वहां कपिलवस्तु के वैभव का वर्णन करते हुए उसके प्राकृतिक सौंदर्, उसके ऐश्वर्य, उसके धन-धान्य से पूरित होना, वहां शिक्षा के महत्व को रेखांकित करने से लेकर वहां की राजनीति, अर्थनीति आदि को भी स्पष्ट रुप में उजागर किया गया है। इस शोध आलेख में अश्वघोष के काव्य में कपिलवस्तु का जो वैभव दिखलाया गया है उसे रेखांकित करना है।

मुख्य शब्द: अश्वघोष, सौन्दरनन्दं, बुद्धचरित, कपिलवस्तु, वैभव।

प्रस्तावना
दिव्यावदान, ललितविस्तर, सौंदरानंद, त्रिपिटक आदि के हवाले से गूगल विकिपीडिया ने कपिलवस्तु के वैभव का वर्णन इन शब्दों में किया है - "दिव्यावदान ने स्पष्टत: इस नगर का संबंध कपिल मुनि से बताया है। ललितविस्तर के अनुसार कपिलवस्तु बहुत बड़ा, समृद्ध, धनधान्य और जन से पूर्ण महानगर था जिसकी चार दिशाओं में चार द्वार थे। नगर सात प्रकारों और परिखाओं से घिरा था। यह वन, आराम, उद्यान और पुष्करिणियों से सुशोभित था और इसमें अनेक चौराहे, सड़कें, बाजार, तोरणद्वार, हर्म्य, कूटागार तथा प्रासाद थे। यहाँ के निवासी गुणी और विद्वान् थे। सौंदरानंद काव्य के अनुसार यहाँ के अमात्य मेधावी थे। पालि त्रिपिटक के अनुसार शाक्य क्षत्रिय थे

और राजकार्य "संथागार" में एकत्र होकर करते थे। उनकी शिक्षा और संस्कृति का स्तर ऊँचा था।" (1)
अश्वघोष ने अपने काव्य में कपिलवस्तु के जिस वैभव का वर्णन किया है उसका वर्णन कुछ उपखंडों के भीतर किया जा सकता है ।

1. कपिलवस्तु की स्थापना : अश्वघोष ने सौन्दरनन्दं महाकाव्य के प्रथम सर्ग में कपिलवस्तु की स्थापना का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। उन्होंने यह दिखलाया है कि कपिल मुनि का आश्रम शिक्षा के केंद्र के रूप में जाना जाता था। वहीं कुछ शाक्य राजकुमारों ने कपिलवस्तु नामक जगह की स्थापना गौतम कपिल के देह त्यागने के बाद उन के निर्देशानुसार किया। ये युवक इक्ष्वाकु वंश के राजकुमार के रूप में वर्णित किए गए हैं और उन्हीं के द्वारा उस समय के इस प्रसिद्ध नगर की स्थापना की गई। सौन्दरनन्दं के प्रथम सर्ग के 33 में अश्लोक में स्पष्ट रूप से यह वर्णित किया गया है कि इस नगर की स्थापना के लिए कपिल मुनि ने स्वयं अपने इक्ष्वाकु वंश के इन शिष्यों को आदेश दिया था –

"अस्मिन्धारापरिक्षिप्ते नेमिचिह्नितलक्षणों ।
निर्मिमीध्वं पुरं यूयं मयि याते त्रिविष्टपं ।।

(जलकी धारासे घिरी हुई तथा पहियोंके चिह्नसे चिह्नित इस भूमिपर, मेरे स्वर्गीय होने पर, तुम लोग एक नगर का निर्माण करो।)" (2)
स्पष्ट है कि कपिलवस्तु की स्थापना कपिल मुनि के इक्ष्वाकु वंश के शिष्यों के द्वारा किया गया। इसी वंश परंपरा में आगे चलकर महाराज शुद्धोधन हुए जिनके पुत्र गौतम बुद्ध और नंद हुए हैं ।

2. शासक : किसी भी राज्य की समृद्धि और उसके वैभव का मूल उसके शासन व्यवस्था, उसके राजकार्य की प्रणाली आदि पर आश्रित होता है । कपिलवस्तु के जिस वैभव का वर्णन अश्वघोष ने अपने काव्यों में किया है उसके मूल में ये तथ्य स्पष्ट दिख जाते हैं कि उस समय कपिलवस्तु के जो राजा हुआ करते थे उनका सात्विक जीवन, शत्रुओं के प्रति उनका रौद्र रूप, प्रजा के बीच उनकी लोकप्रियता और उनकी कुशल नीति कपिलवस्तु की समृद्धि के प्रमुख आधार रहे हैं । इसका वर्णन अश्वघोष ने बुद्धचरित में भी किया है और सौन्दरनन्दं में भी । बुद्धचरित के प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में ही अश्वघोष ने वर्णन किया है कि, "इक्ष्वाक-वंश में शुद्धोदन नामक राजा हुआ। वह अजेय शाक्योंका अधिपति था । इक्ष्वाकुके समान प्रभावशाली था । उसका आचरण पवित्र था । अपनी प्रजाओंके लिए वह शरश्चंद्रके समान प्रिय था ।
ऐक्ष्वाक इक्ष्वाकुसमप्रभावः शाक्येष्वशक्येष् विशुद्धवृतः
प्रियः शरचन्द्र इव प्रजानां शुद्धोदनों नाम बभूव राजा ।।" (3)
राजा शुद्धोदन के चरित्र का वर्णन करते हुए अश्वघोष ने उनके गुणों का वर्णन किया है उससे यह स्पष्ट होता है कि वे अपने जीवन में सदाचारी थे । वे विषयों के प्रति आसक्त नहीं होते थे। उनके पास धन-धान्य की कमी नहीं थी लेकिन वे विनम्र जीवन व्यतीत करते थे । धनधान्य के होने का अभिमान उनके भीतर नहीं था। वे अपने मद में चूर होकर दूसरों का अपमान करना पसंद नहीं करते थे । और वीरता उनमें ऐसी थी कि उनके शत्रु उनसे थरथर कांपते थे लेकिन वह किसी से भयभीत नहीं होते थे । इस तरह के गुण जब राजा के भीतर हो तभी उसकी प्रजा सुखी रह सकती है और वह राज्य वैभव को प्राप्त कर सकता है। अश्वघोष ने सौन्दरनन्दं में लिखा है - "वह विषयमें आसक्त नहीं हुआ, लक्ष्मी प्राप्त कर वह उद्धत नहीं हुआ, अपनी समृद्धिके कारण दूसरोंका अपमान नहीं किया, और अपने शत्रुओंसे व्यथित नहीं हुआ ।

यः ससज्जे न कामेषु श्रीप्राप्तौ न विसिस्मिये।
नावमेने परानुदुध्या परेभ्यो नापि विव्यथे।।" (4)

3. जीवन–स्तर : अश्वघोष ने कपिलवस्तु के राजा का जिस तरह का वर्णन किया है स्पष्ट है उसकी प्रजा भी उसी के अनुकूल आचरण करने वाली रही होगी । प्रजा यदि कुछ अनुकूल आचरण करने से भटकती है तब उसे दंडित कर सद्मार्ग पर लाना एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था के लिए बहुत अधिक मुश्किल नहीं होता है। उस समय प्रजा का जीवन का या यूं कहें कि कपिलवस्तु में जीवन का स्तर इस तरह का था कि लोग उच्च आदर्शों से युक्त जीवन व्यतीत करते थे । झूठ बोलना, बेवजह हिंसा करना आदि आदतों से परहेज कर निष्ठा पूर्वक जीवन यापन करना ही प्रजा के लिए शुभकारी था और इसी का आभार अश्वघोष के काव्य में भी मिल जाता है –

"उस समय उसके राज्यमें, जैसे नहुषके पुत्र ययातिके राज्यमें, बंधुओंका असम्मान करनेवाला, अदाता, अव्रती, झूठा, और हिंसक कोई नहीं था ।
नागौरवो बन्धुषु नाप्यदाता नैवाव्रतो नानृतिको न हिंस्त्रः।
आसीत्तदा कथ्चन तस्य राज्ये राज्ञो ययातेरिव नाहुषस्य ।।" (5)

वहीं पर राज्य के सुखों का वर्णन करते हुए यह भी वर्णित कर दिया गया है कि लोक भयमुक्त होकर जीवनयापन कर रहे थे। रोग से मुक्त थे और स्वस्थ जीवन होने के कारण उनमें सदैव खुशी देखी जाती थी । वे बिल्कुल निश्चिंत होकर ऐसे जीवन यापन कर रहे थे जैसे कि स्वर्ग में जी रहे हों । लोग सदाचारी थे । दुराचार का चिन्ह कहीं प्रतीत नहीं होता है । पति ने कभी अपनी पत्नी के विरुद्ध या पत्नी ने पति के विरुद्ध सदाचार भंग नहीं किया, दोनों एक दूसरे के प्रति वचनबद्ध थे और अपन अपनी वचनबद्धता पर सदैव कायम रहा करते थे । किसी ने अपने मानसिक हवस को मिटाने के लिए किसी का संसर्ग नहीं किया। स्त्री-पुरुष जब एक दूसरे के संसर्ग में आते थे तो धर्मतः उनका उद्देश्य संतान की कामना होती थी । किसी ने देह व्यापार जैसे दुराचारों के माध्यम से धन अर्जित नहीं किए। धन के लिए किसी ने अपने धर्म का खंडन नहीं किया न ही कभी धर्म और आडंबर जैसे कार्यों के लिए लोगों ने हिंसा करना पसंद किया । ये सारे तथ्य इस बात के प्रमाण है कि कपिलवस्तु का जीवन उस समय सदाचारपूर्ण वैभव और विलास का जीवन था ।

4. प्राकृतिक वैभव : कपिलवस्तु की स्थापना करते समय उसके निर्माताओं ने उसे प्राकृतिक रूप से समृद्ध किया। चारों तरफ मनोरम और सुंदर धर्मशालाएं बनवाई गई । प्रकृति की गोद में बसा हुआ वह नगर प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विशेष रूप से विख्यात हुआ । प्रकृति-प्रदत सुंदरता तो प्राप्त था ही उसके अलावा भी अनेक ऐसे कुएं, झड़ने और प्राकृतिक स्थलों का निर्माण किया गया । जलाशयों का खूबसूरती से निर्माण कर उसमें हंस जैसे सौंदर्य उत्पादक जीवों का पालन किया गया। चारों तरफ उस नगर की परिखा नदी की तरह चौड़ी थी, राजपथ भव्य और सीधे बनाए गए थे । प्राचीर पहाड़ों की तरह विशाल थे। अश्वघोष ने लिखा है कि सफेद अट्बालिकाओंसे उसका मुख सुंदर लगता था, उसके भीतरी बाजार अच्छी तरह विभाजित थे, वह महलोंकी माला से घिरा हुआ था और ऐसा लगता था जैसे वह नगर हिमालय की कुक्षी हो । सौन्दरनन्द में वर्णन आता है कि,

"वहां पुर-वासियोंको प्रसन्न करनेकी इच्छासे उन्होंने प्रसन्नचित्त होकर उद्यान नामक यशके सुंदर स्थान बनवाये।" (6)

5. धन–धान्य : अत्यंत कुशलता से निर्मित कपिलवस्तु धन-धान्य से वैभव के उत्कर्ष पर रहा । शुरुआती समय से ही जिस तरह व्यवस्थित शासन प्रणाली और लोगों के जीवन में खुशहाली का वर्णन अश्वघोष ने अपने काव्य में किया है वह इस बात की ओर स्पष्ट संकेत कर देता है कि कपिलवस्तु को धन की कमी नहीं थी। इस बात का तो स्पष्ट उल्लेख कहीं नहीं है कि धन के स्रोत क्या थे, किन किन उद्योगों से धन उपार्जित होता था ?; लेकिन इस बात का वर्णन अवश्य मिलता है कि शासन की ओर से कभी भी प्रजा पर अनुचित कर नहीं लगाया गया। प्रजा से जो कर लिए जाते थे वे जायज कर मात्र ही होते थे । इसके बावजूद वहां राज्य संपदा में उत्तरोत्तर वृद्धि का संकेत है किया गया है । उस नगर के वैभव का वर्णन करते हुए चित्र खींचा गया है कि धनी, शांत और विद्वान मनुष्य से भरा हुआ वह नगर वैसे ही शोभायमान था जैसे किन्नरों का नगर मंदराचल सुख और समृद्धि के लिए जाना गया है । अश्वघोष तो यहां तक वर्णन करते हैं कि वह नगर संपति का गुप्त स्थान सा बन गया था । यहां नित्य संपदाओं की वृद्धि हो रही थी। उस नगर के धन-धान्य से भरे पूरे होने का वर्णन अश्वघोष ने सौन्दरनन्द में किया है। वे लिखते हैं कि, "वह नगर धनका निधान-सा, तेजका आधार-सा, विद्याका मंदिर-सा और संपत्तिका गुप्त स्थान-सा था।" (7)

वहीं आगे उन्होंने इस ओर भी संकेत किया है कि राजा के द्वारा किसी प्रकार का अन्यायपूर्वक कर नहीं लिया जाता था। "उन्होंने अन्यायपूर्वक कोई कर नहीं लगाया, इस लिए अल्पकालमें ही उन्होंने उस नगरको (धन–जन से) भर दिया।
यस्मादन्यायतस्ते च कंचिन्नाचीकरन्कं।
तस्मादल्पेन कालेन तत्तदापपुरन्पुरं।।" (8)

अन्यायपूर्वक किसी कर के नहीं लगाए जाने पर भी वह नगर धन से भर उठा था । व्यापारियों और गुणीजनों को भी वहां किसी प्रकार का खतरा नहीं दिखा और यही कारण है कि वह नगर निरंतर विकसित होता गया ।

6. शिक्षा : ऐसा प्रमाण मिलता है कि कपिलवस्तु में शस्त्र और शास्त्र दोनों ही तरह की शिक्षा युवाओं को दी जाती थी । वहां न शस्त्र जानने वाले योद्धाओं की कमी थी न शास्त्र जानने वाले गुणीजनों की। दोनों ही तरह के लोग वहां सुख पूर्वक रहते थे । बाहुबलियों का स्तंभ माना जाने वाला वह नगर शरण चाहने वालों का आश्रय बना था। वहां राज्य और राज्य के निवासियों के द्वारा गुनी जनों का आदर किया जाता था । यही कारण है कि गुणीजन वहां शिक्षा-दीक्षा देने के लिए निरंतर जाया करते थे और कपिलवस्तु शस्त्र और शास्त्र दोनों ही

तरह की विधा में पारंगत लोगों का निवास स्थल बन चुका था। अश्वघोष ने सौन्दरनन्दं में लिखा है -

"वह गुणियोंका निवास-वृक्ष, शरण चाहनेवालोंका आश्रय, शास्त्र जाननेवालोंका घर और बाहुशाली वीरोंका स्तंभ था।" (9)

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में बढ़ते हुए हम देखते हैं कि अश्वघोष ने अपने महाकाव्य सौन्दरनन्दं और बुद्धचरित में कपिलवस्तु का जो वर्णन किया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि कपिलवस्तु नगर का निर्माण मुनि कपिल के शिष्यों के द्वारा किया गया था इसी कारण उस नगर का नाम कपिलवस्तु पड़ा। इस नगर के निर्माता इक्ष्वाकु वंश के थे इसलिए इस वंश के शासकों को इक्ष्वाकुवंशी कहा गया है और इसी वंश में आगे चलकर गौतम बुद्ध और नंद के पिता शुद्धोदन राजा बनते हैं । यह राज्य शुद्धोदन के शासनकाल में और जैसा प्रमाण मिलता है उससे पहले भी, शासन व्यवस्था, धन-धान्य, प्राकृतिक वैभव, शिक्षा, लोगों का जीवन स्तर, धर्म, संस्कृति, हर दृष्टि से परिपूर्ण था। कपिलवस्तु का जो वर्णन अश्वघोष ने अपने काव्य में किया है वह कपिलवस्तु के वैभवशाली होने का प्रमाण है ।

संदर्भ सूची

1. अंतर्जाल पर विकिपीडिया पृष्ठ, लिंक -
2. अश्वघोष- सौन्दरनन्दं, अनुवाद- सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पुनर्मुद्रण : 2001, पृ०- 7
3. अश्वघोष - बुद्धचरित, अनुवाद- सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण : 1985, पृ०- 1
4. अश्वघोष- सौन्दरनन्दं, अनुवाद- सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पुनर्मुद्रण : 2001, पृ०- 15
5. अश्वघोष - बुद्धचरित, अनुवाद- सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण : 1985, पृ०- 20
6. अश्वघोष- सौन्दरनन्दं, अनुवाद- सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पुनर्मुद्रण : 2001, पृ०- 11)
7. वहीं
8. वहीं, पृ०- 12
9. वहीं ।